आचार्य मानतुंङ्ग स्वामी विरचितं

नमिऊण भयहर पार्श्वनाथ स्तोत्र

अपरनाम भयहर संथवो

पूजा विधान दीपार्चना संग्रह

माण्डला

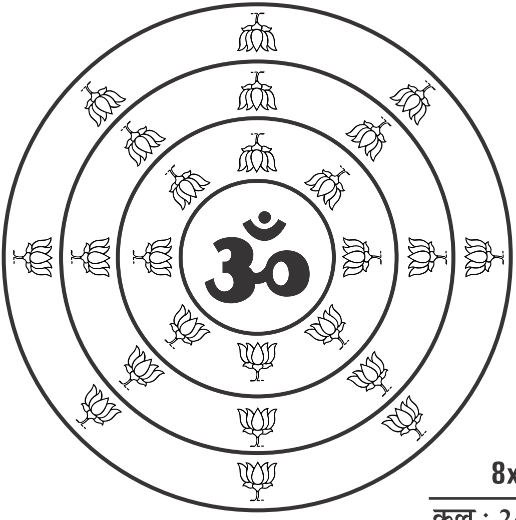

8x3=24

कुल : 24 अर्घ्यं

विधान रचयिता-

परम पूज्य साहित्य रत्नाकर

आचार्य श्री 108 विशदसागरजी मुनिराज

कृति : **नमिऊण भयहर पार्श्वनाथ स्तोत्र पूजा विधान दीपार्चना संग्रह**

मूल कृतिकार : आचार्य श्री मानतुंग स्वामी

विधान कृतिकार : परम पूज्य साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति
आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज

संस्करण : प्रथम-2025, प्रतियाँ -1000

संकलन : स्थविर मुनिश्री 108 विशालसागरजी महाराज
मुनिश्री विभोरसागरजी, मुनिश्री विलक्ष्यसागरजी
मुनिश्री विपिनसागरजी

सहयोग : आर्यिका श्री भक्तिभारती माताजी
क्षुल्लिका श्री वात्सल्यभारती माताजी

संयोजन : ब्र. आस्था दीदी - मो.: 9660996425
ब्र. प्रदीप भैया - मो.: 7568840873

प्राप्ति स्थल : 1. सुरेश जैन सेठी जयपुर, मो.: 9413336017
2. श्री महेन्द्र जैन, दिल्ली -मो.: 9810570747
3. हरीश जैन, दिल्ली - मो.: 9136248971
4. विशद साहित्य केन्द्र, रेवाड़ी मो.: 9416888879
5. नीरज जैन, लखनऊ मो. 94512-51308
6. जैन मंदिर, गुलाब वाटिका, दिल्ली
मो.: 9818570432

मुद्रक : डीसेन्ट ग्राफिक्स, इंदौर मो.: 9826014047

पुण्यार्जक :

श्रीमती मुन्नाबाई नरेशकुमार गंगवाल

हरसोदा वाले, धार (म.प्र.) मो.:94250-47028

कृति : **नमिऊण भयहर पार्श्वनाथ स्तोत्र पूजा विधान दीपार्चना संग्रह**
मूल कृतिकार : आचार्य श्री मानतुंग स्वामी
विधान कृतिकार : परम पूज्य साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति
आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज
संस्करण : प्रथम-2025, प्रतियाँ -1000
संकलन : स्थविर मुनिश्री 108 विशालसागरजी महाराज
मुनिश्री विश्वाक्षरसागरजी, मुनिश्री विभोरसागरजी
मुनिश्री विलक्ष्यसागरजी, मुनिश्री विपिनसागरजी
सहयोग : आर्यिका श्री भक्तिभारती माताजी
क्षुल्लिका श्री वात्सल्यभारती माताजी
संयोजन : ब्र. आस्था दीदी - मो.: 9660996425
ब्र. प्रदीप भैया - मो.: 7568840873
प्राप्ति स्थल : 1. सुरेश जैन सेठी जयपुर, मो.: 9413336017
2. श्री महेन्द्र जैन, दिल्ली -मो.: 9810570747
3. हरीश जैन, दिल्ली - मो.: 9136248971
4. विशद साहित्य केन्द्र, रेवाड़ी मो.: 9416888879
5. नीरज जैन, लखनऊ मो. 94512-51308
6. जैन मंदिर, गुलाब वाटिका, दिल्ली
मो.: 9818570432
मुद्रक : डीसेन्ट ग्राफिक्स, इंदौर मो.: 9826014047

पुण्यार्जक : **श्री रौनक जैन**
104-सेंचुरी पार्क, राजेन्द्र नगर
इंदौर (म.प्र.) - मो : 9754587381

पुण्यार्जक : **श्री अजितकुमार बंडी**
पुत्र - अक्षय जैन, अयांक जैन
मंदसौर (म.प्र.) मो.: 8989495550

''सर्व भय निवारक है यह नमिऊण स्तोत्र विधान''

सातवीं सदी में आचार्य श्री मानतुंग स्वामी के पवित्र हृदय से प्रस्फुटित भक्तामर स्तोत्र की भावभीनी रचना प्रभु भक्ति से ओत-प्रोत है। भक्तामर रचनाकार मानतुंङ्गाचार्यजी ने नमिऊण स्तोत्र अपरनाम भयहर संथवो की रचना भी प्राकृत भाषा में पार्श्व प्रभु की भक्ति में लीन होकर की। भक्ति ही एक ऐसा माध्यम है जो भक्त और भगवान के संबंधों में निकटता स्थापित करती है। जब भक्त, भक्तिरस में निमग्न होता है तो उसके परिणाम प्रशस्त एवं भावनाएँ निर्मल हो जाती हैं। अनायास ही बिगड़े काम बनने लगते हैं। वर्तमान में सर्वाधिक विधान रचियता प.पू. आचार्य गुरुवर **श्री विशदसागरजी महाराज** ने प्रस्तुत नमिऊण स्तोत्र के 24 काव्यों का पद्यानुवाद कर भयहर पार्श्वनाथ स्तोत्र पूजा विधान दीपार्चना की रचना कर प्रभु भक्तों को अधिक समय तक पार्श्व प्रभु की भक्ति में लीन रहने का अवसर प्रदान किया है।

अगर आपको पूजा विधान करना है तो मंत्रों में अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा बोले, यदि आपको दीपार्चना करनी हैं तो 24 काव्यों में मंत्रों में नमः के बाद अर्घ्यं निर्वपामिती स्वाहा के स्थान पर ''प्रज्जवलित दीप स्थापनं करोमि'' बोलना है। पुनश्चः मूल रचियता आचार्य श्री मानतुंङ्गाचार्यजी एवं पद्यानुवाद रचियता गुरुवर आचार्य श्री विशदसागरजी मुनिराज के श्री चरणों में इस महाउपकार के लिए त्रिभक्ति युत

नमोऽस्तु... नमोऽस्तु...नमोऽस्तु...!

स्थविर मुनि विशाल सागर (संघस्थ)

वर्षायोग 2024-करगुवाँ (झाँसी) उ.प्र.

लघु विनय पाठ-1

(दोहा)

पूजा विधि से पूर्व यह, पढ़ें विनय से पाठ ।
धन्य जिनेश्वर देवजी, कर्म नशाए आठ ॥1॥
शिव वनिता के ईश तुम, पाए केवल ज्ञान ।
अनन्त चतुष्टय धारते, देते शिव सोपान ।॥2॥
पीड़ा हारी लोक में, भव-दधि नाशनहार ।
ज्ञायक हो त्रयलोक के, शिवपद के दातार ॥3॥
धर्मामृत दायक प्रभो!, तुम हो एक जिनेन्द्र ।
चरण कमल में आपके, झुकते विनतं शतेन्द्र ।।4।।
भविजन को भवसिन्धु में, एक आप आधार ।
कर्म बन्ध का जीव के, करने वाले क्षार ॥5॥
चरण कमल तव पूजते, विघ्न रोग हों नाश ।
भवि जीवों को मोक्ष पथ, करते आप प्रकाश ॥6॥
यह जग स्वारथ से भरा, सदा बढ़ाए राग ।
दर्श ज्ञान दे आपका, जग को विशद विरांग ।।॥7॥
एक शरण तुम लोक में, करते भव से पार ।
अतः भक्त बन के प्रभो! आया तुमरे द्वार॥8॥

मंगल पाठ

मंगल अर्हत् सिद्ध जिन, आचार्योपाध्याय संत ।
धर्मागम की अर्चना, से हो भव का अंत ॥1॥
मंगल जिनगृह बिम्ब जिन, भक्ती के आधार।
जिनकी अर्चा कर मिले, मोक्ष महल का द्वार ॥10॥

॥ इत्याशीर्वादःपुष्पांजलिं ॥

अथ पूजा पीठिक

ॐ जय जय जय नमोस्तु, नमोस्तु, नमोस्तु ।
णमोअरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं ।

ॐ ह्रीं अनादिमूल मंत्रेभ्योनमः। (पुष्पांजलिं क्षिपामि)

चत्तारि मंगलं, अरिहन्ता मंगलं, सिद्धा मंगलं,
साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो, धम्मो मंगलं ।
चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहन्ता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा,
साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो, धम्मो लोगुत्तमो।
चत्तारि शरणं पव्वज्जामि, अरिहंते शरणं पव्वज्जामि,
सिद्धे शरणं पव्वज्जामि, साहू शरणं पव्वज्जामि,
केवलिपण्णत्तं, धम्मं शरणं पव्वज्जामि।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा। (पुष्पांजलिं क्षिपामि)

मंगल विधान

शुद्धाशुद्ध अवस्था में कोई, णमोकार को ध्याये ।
पूर्ण अमंगल नशे जीव का, मंगलमय हो जाए ।।
सब पापों का नाशी है जो, मंगल प्रथम कहाए ।
विघ्न प्रलय विषनिर्विष शाकिनि, बाधा ना रह पाए ।।

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

अर्घ्यावली

जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल साथ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य ले, पूज रहे जिन नाथ।।

ॐ ह्रीं श्री भगवतो गर्भ जन्म-तप-ज्ञान निर्वाण पंच कल्याणकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।। ।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधुभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।।2।।
ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिन अष्टाधिक सहस्त्रनामेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।।3।।
ॐ ह्रीं श्री द्वादशांगवाणी प्रथमानुयोग, करणानुयोग, चरणानुयोग, द्रव्यानुयोग नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।
ॐ ह्रीं ढाईद्वीप स्थित त्रिऊन नव कोटि मुनि चरणकमलेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।।5।।

"पूजा प्रतिज्ञा पाठ"

अनेकांत स्याद्वाद के धारी, अनन्त चतुष्टय विद्यावान।
मूल संघ में श्रद्धालू जन, का करने वाले कल्याण।
तीन लोक के ज्ञाता दृष्टा, जग मंगलकारी भगवान।
भाव शुद्धि पाने हे स्वामी!, करता हूँ प्रभु का गुणगान ।।1।।
निज स्वभाव विभाव प्रकाशक, श्री जिनेन्द्र हैं क्षेम निधान ।
तीन लोकवर्ती द्रव्यों के, विस्तृत ज्ञानी हे भगवान!
हे अर्हन्त ! अष्ट द्रव्यों का, पाया मैंने आलम्बन।
होकर के एकाग्रचित्त मैं, पुण्यादिक का करूँ हवन ।।2।।

ॐ ह्रीं विधियज्ञ प्रतिज्ञायै जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलिक्षिपामि।

स्वस्ति मंगल पाठ

ऋषभ अजित सम्भव अभिनन्दन, सुमति पद्म सुपार्श्व जिनेश।
चन्द्र पुष्प शीतल श्रेयांस जिन, वासुपूज्य पूजूँ तीर्थेश ।।
विमलानन्त धर्म शांती जिन, कुन्थु अरह मल्ली दें श्रेय।
मुनिसुव्रत नमि नेमि पार्श्व प्रभु, वीर के पद में स्वस्ति करेय ।।

इति श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर स्वस्ति मंगल विधानं पुष्पांजलिं क्षिपामि।

परमर्षि स्वस्ति मंगल पाठ

ऋषिवर ज्ञान ध्यान तप करके, हो जाते हैं ऋद्धीवान।
मूलभेद हैं आठ ऋद्धि के, चौंसठ उत्तर भेद महान ।।
बुद्धि ऋद्धि के भेद अठारह, जिनको पाके ऋद्धीवान।
निस्पृह होकर करें साधना, 'विशद' करें स्व पर कल्याण ।।1।।
ऋद्धि विक्रिया ग्यारह भेदों, वाले साधू ऋद्धीवान।
नौं भेदों युत चारण ऋद्धी, धारी साधू रहे महान।।
तप ऋद्धी के भेद सात हैं, तप करते साधू गुणवान।
मन बल वचन काय बल ऋद्धी, धारी साधू रहे प्रधान।।2।।
भेद आठ औषधि ऋद्धि के, जिनके धारी सर्व ऋशीष।
रस ऋद्धी के भेद कहे छह, रसास्वाद शुभ पाए मुनीश।।
ऋद्धि अक्षीण महानस एवं, ऋद्धि महालय धर ऋषिराज।
जिनकी अर्चा कर हो जाते, सफल सभी के सारे काज ।।3।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

सारी जिन्दगी रिश्ता निभाया हमने ।
यूँ ही समय बीत गया कुछ न पाया हमने ॥
लोग कहते हैं आप सबका भला करते हो ।
औरों का भला करने में धोखा खाया हमने ॥

श्री देव शास्त्र गुरु पूजन

दोहा- देव-शास्त्र-गुरु पद नमन, विद्यमान तीर्थेश ।

सिद्ध प्रभू निर्वाण भू, पूज रहे अवशेष ॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु समूह विद्यमान विशति जिनः अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठि सर्व निर्वाणक्षेत्र समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वानन । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं । अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चाल छन्द)

जल के यह कलश भराए, त्रय रोग नशाने आए ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते ॥1॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र गुरुभ्यो जन्म जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ गंध बनाकर लाए, भव ताप नशाने आए ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते ॥2॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

अक्षत हम यहाँ चढ़ाएँ, अक्षय पदवी शुभ पाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते ॥3॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

सुरभित ये पुष्प चढ़ाएँ, रुज काम से मुक्ती पाएँ ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते ॥4॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र गुरुभ्यो कामबाण विध्वंशनाय पुष्पंनिर्व.स्वाहा।

पावन नैवेद्य चढ़ाएँ, हम क्षुधा रोग विनशाएँ ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते ॥5॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

घृत का ये दीप जलाएँ, अज्ञान से मुक्ती पाएँ ।

हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते ।।6।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

अग्नी में धूप जलाएँ, हम आठों कर्म नशाएँ ।

हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते ।।7।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

ताजे फल यहाँ चढ़ाएँ, शुभ मोक्ष महाफल पाएँ ।

हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते ।।8।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा ।

पावन ये अर्घ्य चढ़ाएँ, हम पद अनर्घ्य प्रगटाएँ ।

हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते ।।9।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो अनर्घपद प्राप्ताय अर्घ्य निर्व. स्वाहा।

दोहा - शांती धारा कर मिले, मन में शांति अपार ।

अतः भाव से आज हम, देते शांती धार ।।

शान्तये शांतिधारा

दोहा - पुष्पाञ्जलि करते यहाँ, लिए पुष्प यह हाथ ।

देव शास्त्र गुरु पद युगल, झुका रहे हम माथ ।।

पुष्पाञ्जलिंक्षिपेत्

अर्घ्यावली

दोहा-दोष अठारह से रहित, प्रभु छियालिस गुणवान ।

देव श्री अर्हन्त का, करते हम गुणगान ।।1।।

ॐ ह्रीं षट् चत्त्वारिंशत् गुण विभूषित अष्टादश दोष रहित श्री अरिहंत सिद्ध जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री जिन के सर्वांग से, खिरे दिव्य ध्वनि श्रेष्ठ ।

द्वादशांग मय पूजते, लेकर अर्घ्यं यथेष्ठ ।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीजिन मुखोद्भूत सरस्वती देव्यै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विषयाशा त्यागी रहे, ज्ञान ध्यान तपवान ।
संगारम्भ विहीन पद, करें विशद गुणगान ।।3।।
ॐ ह्रीं श्री आचार्य उपाध्याय साधु परमेष्ठी चरण कमलेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
बीस विदेहों में रहें, विहरमान तीर्थेश ।
भाव सहित हम पूजते, लेकर अर्घ्य विशेष ।।4।।
ॐ ह्रीं श्री विहरमान विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
अष्ट कर्म को नाशकर, के होते हैं सिद्ध ।
पूज रहे हम भाव से, जो हैं जगत् प्रसिद्ध ।।5।।
ॐ ह्रीं श्री अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
तीन लोक में जो रहे, तीर्थ क्षेत्र निर्वाण ।
जिनकी अर्चा भाव से, करते यहाँ महान ।।6।।
ॐ ह्रीं श्री सर्व निर्वाण क्षेत्रेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

जयमाला

दोहा- देव-शास्त्र-गुरु के चरण, वन्दन करें त्रिकाल ।
'विशद' भाव से आज हम, गाते हैं जयमाल।।

(तामरस छंद)

जय-जय-जय अरहंत नमस्ते, मुक्ति वधू के कंत नमस्ते ।
कर्म घातिया नाश नमस्ते, केवलज्ञान प्रकाश नमस्ते ।
जगती पति जगदीश नमस्ते, सिद्ध शिला के ईश नमस्ते ।
वीतराग जिनदेव नमस्ते, चरणों विशद सदैव नमस्ते ।।
विद्यमान तीर्थेश नमस्ते, श्री जिनेन्द्र अवशेष नमस्ते ।
जिनवाणी ॐकार नमस्ते, जैनागम शुभकार नमस्ते ।
वीतराग जिन संत नमस्ते, सर्वसाधु निर्ग्रन्थ नमस्ते ।
अकृत्रिम जिनबिम्ब नमस्ते, कृत्रिम जिन प्रतिबिम्ब नमस्ते ।।
दर्श ज्ञान चारित्र नमस्ते, धर्म क्षमादि पवित्र नमस्ते ।
तीर्थ क्षेत्र निर्वाण नमस्ते, पावन पञ्चकल्याण नमस्ते ।

दोहा- देव-शास्त्र-गुरु के चरण, वन्दन करें त्रिकाल ।
`विशद` भाव से आज हम, गाते हैं जयमाल।।

(तामरस छंद)

जय-जय-जय अरहंत नमस्ते, मुक्ति वधू के कंत नमस्ते ।
कर्म घातिया नाश नमस्ते, केवलज्ञान प्रकाश नमस्ते ।
जगती पति जगदीश नमस्ते, सिद्ध शिला के ईश नमस्ते ।
वीतराग जिनदेव नमस्ते, चरणों विशद सदैव नमस्ते ॥
विद्यमान तीर्थेश नमस्ते, श्री जिनेन्द्र अवशेष नमस्ते ।
जिनवाणी ॐकार नमस्ते, जैनागम शुभकार नमस्ते ।
वीतराग जिन संत नमस्ते, सर्वसाधु निर्ग्रन्थ नमस्ते ।
अकृत्रिम जिनबिम्ब नमस्ते, कृत्रिम जिन प्रतिबिम्ब नमस्ते ।।
दर्श ज्ञान चारित्र नमस्ते, धर्म क्षमादि पवित्र नमस्ते ।
तीर्थ क्षेत्र निर्वाण नमस्ते, पावन पञ्चकल्याण नमस्ते ।
अतिशय क्षेत्र विशाल नमस्ते, जिन तीर्थेश त्रिकाल नमस्ते ।
शाश्वत तीरथराज नमस्ते, `विशद` पूजते आज नमस्ते ॥

दोहा- अर्हतादि न व देवता, जिनवाणी जिन संत ।
पूज रहे हम भाव से, पाने भव का अंत ।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र गुरु विद्यमान विंशति जिन अनन्तानंत सिद्ध सर्व निर्वाणक्षेत्र समूह जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा-देव-शास्त्र-गुरु पूजते, भाव सहित जो लोग ।
ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य पा, पावें शिव का योग ।।

।। इत्याशीर्वादः (पुष्पाञ्जलिंक्षिपेत)।।

मूलनायक सहित समुच्चय पूजा

स्थापन (दोहा)

देव शास्त्र गुरु देव नव, विद्यमान जिन सिद्ध ।
कृत्रिमा-कृत्रिम बिम्ब जिन, भू निर्वाण प्रसिद्ध ॥
सहस्त्रनाम दशधर्म शुभ, रत्नत्रय णमोकार ।
सोलह कारण का हृदय, आह्वानन् शत बार॥

ॐ ह्रीं अर्ह मूलनायक श्री..... सहित सर्व देव शास्त्र गुरु, नवदेवता, तीस चौबीसी विद्यमान विंशति जिन, पंचमेरु, नन्दीश्वर, त्रिलोक सम्बन्धी, कृत्रिम अकृत्रिम चैत्य चैत्यालय, सहस्त्रनाम, सोलह कारण, दशलक्षण, रत्नत्रय, णमोकार, निर्वाण क्षेत्र गणधरादि मुनि समूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितौ भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(सखी छन्द)

यह निर्मल नीर चढ़ाएँ, जन्मादिक रुज विनशाएँ ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ ॥1॥

ॐ ह्रीं अर्ह मूलनायक श्री... सहित सर्व पूज्येसु श्री जिनेन्द्राय नमः जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

सुरभित यह गंध चढ़ाएँ, भव सागर से तिर जाएँ ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ ॥2॥

ॐ ह्रीं अर्ह मूलनायक श्री... सहित सर्व पूज्येसु श्री जिनेन्द्राय नमः भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीतिस्वाहा ।

अक्षत के पुंज चढ़ाएँ, शाश्वत अक्षय पद पाएँ ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ ॥3॥

ॐ ह्रीं अर्ह मूलनायक श्री... सहित सर्व पूज्येसु श्री जिनेन्द्राय नमः अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

पुष्पित हम पुष्प चढ़ाएँ, कामादिक दोष नशाएँ ।

देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ ॥4॥

ॐ ह्रीं अर्ह मूलनायक श्री... सहित सर्व पूज्येसु श्री जिनेन्द्राय नमः कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

चरु यह रसदार चढ़ाएँ, हम क्षुधा रोग विनशाएँ ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ ॥5॥

ॐ ह्रीं अर्ह मूलनायक श्री... सहित सर्व पूज्येसु श्री जिनेन्द्राय नमः क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

रत्नोंमय दीप जलाएँ, हम मोह तिमिर विनशाएँ ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ ॥6॥

ॐ ह्रीं अहँ मूलनायक श्री... सहित सर्व पूज्येसु श्री जिनेन्द्राय नमः महामोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

सुरभित यह धूप जलाएँ, कर्मों से मुक्ती पाएँ ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ ॥7॥

ॐ ह्रीं अहँ मूलनायक श्री... सहित सर्व पूज्येसु श्री जिनेन्द्राय नमः अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीतिस्वाहा ।

फल ताजे शिव फलदायी, हम चढ़ा रहे हैं भाई ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ ॥8॥

ॐ ह्रीं अर्ह मूलनायक श्री... सहित सर्व पूज्येसु श्री जिनेन्द्राय नमः मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

यह पावन अर्घ्य चढ़ाएँ, अनुपम अनर्घ्य पद पाएँ ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ ॥9॥

ॐ ह्रीं अर्ह मूलनायक श्री... सहित सर्व पूज्येसु श्री जिनेन्द्राय नमः अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा- शांती पाने के लिए, देते शांती धार ।
हमको भी निज सम करो, कर दो यह उपकार ॥

(शांतये शांतिधारा)

दोहा - पुष्पांजलि करते यहाँ, लेकर पावन फूल ।

विशद भावना है यही, कर्म होंय निर्मूल ॥

(पुष्पांजलि क्षिपेत्)

जयमाला

दोहा - जैन धर्म जयवंत है, तीनों लोक त्रिकाल ।
गाते जैनाराध्य की, भाव सहित जयमाल ।।

(ज्ञानोदय छन्द)

अर्हत् सिद्धाचार्य उपाध्याय, सर्व साधु के चरण नमन ।
जैन धर्म जिन चैत्य जिनालय, जैनागम का है अर्चन ॥1॥
भरतैरावत ढाई द्वीप में, तीन काल के जिन तीर्थेश ।
पंच विदेहों के तीर्थंकर, पूज रहे हम यहाँ विशेष ॥2॥
स्वर्ग लोक में और ज्योतिषी, देवों के जो रहे विमान ।
भावन व्यन्तर के गेहों में, रहे जिनालय महति महान ।।3।।
मध्य लोक में मेरु कुलाचल, गिरि विजयार्ध हैं इष्वाकार ।
रजताचल मानुषोत्तर गिरि तरु, नन्दीश्वर हैं मंगलकार ।।4।।
रुचक कुण्डल गिरि पे जिनगृह, सिद्ध क्षेत्र जो हैं निर्वाण ।
सहस्त्रकूट शुभ समवशरण जिन, मानस्तंभ हैं पूज्य महान ।5।।
उत्तम क्षमा मार्दव आदिक, बतलाए दश धर्म विशेष ।
रत्नत्रय युत धर्म ऋद्धियाँ, सहसनाम पावें तीर्थेश ।।6।।

दोहा- सोलह कारण भावना, और अठाई पर्व ।
पंच कल्याणक आदि हम, पूज रहें हैं सर्व ॥

ॐ ह्रीं अर्ह मूलनायक 1008 श्री......सहित वर्तमान भूत भविष्यत सम्बन्धी पंच भरत, पंच ऐरावत, पंच विदेह क्षेत्रावस्थित सर्व तीर्थंकर, नवदेवता, मध्य ऊर्ध्व एवं अधोलोक, नन्दीश्वर, पंचमेरु

भयहर श्री पार्श्वनाथ स्तोत्र पूजा

स्थापना

हे कर्म विजेता तीर्थंकर ! जग जन के जीवन ज्योति धाम ।
हे जिनवाणी के अध्येता ! वाणी से झरता अमृत ललाम ।।
उपसर्ग जयी हे वीतराग ! दाता जग में अक्षय विराम ।
हे पार्श्वनाथ करुणा निधान ! तव चरणों में शत-शत प्रणाम ।।

दोहा - हे कृपा सिन्धु समतामयी, करो जगत कल्याण ।
आओ तिष्ठो मम् हृदय, करते हम आह्वान ।।

ॐ ह्रीं नमिऊण स्तोत्र व्रताराध्य भयहर श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र !
अत्र अवतर-अवतर संवौष्ट इति आह्वाननं ।
ॐ ह्रीं नमिऊण स्तोत्र व्रताराध्य भयहर श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र !
अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं ।
ॐ ह्रीं नमिऊण स्तोत्र व्रताराध्य भयहर श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र !
अत्र मम् सन्निहितौ भव भव वषट् सन्निधिकरणं ।

(शम्भू छन्द)

हे पार्श्व प्रभो ! मेरे मन के, कलुषित भावों को निर्मल कर दो ।
मेरे अंतर में भक्ति सुधा का, शीतल निर्मल जल भर दो ।।
जीवन पर जीवन पाकर कइ, सन्तप्त भटकते आए हैं ।
जल अर्पित करके चरणों में, हम सन्मति पाने आए हैं ।।1।।

ॐ ह्रीं श्री भयहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः
जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

तुमने उपसर्ग सहन करके, समता को धारा हे स्वामी ।
तव भक्ति करने पग थिरके, हे पार्श्वनाथ अंतरयामी! ।।

सुरभित चंदन ये हाथ लिए, आताप मिटाने आए हैं ।
हे नाथ ! आपकी अर्चा कर, हम सन्मति पाने आए हैं।।2।।

ॐ ह्रीं श्री भयहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः
संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

कर में अक्षत लेकर आए, अक्षय विश्वास लिए स्वामी ।
श्रद्धा के अंदर भाव जगें, भक्तीमय हे अन्तर्यामी! ।।
व्याकुल होकर भटके भव भव, पद अक्षय पाने आए हैं।
हे नाथ आपकी अर्चा कर, हम सन्मति पाने आए है ।।3।।

ॐ ह्रीं श्री भयहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः
अक्षय पद प्राप्त्ये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रिय के विषय विनश्वर हैं, फिर भी मन को ये भाते हैं ।
है घोर तिमिर चारों गति में, भवि जीवों को भटकाते हैं ।।
निज काम वासना नाश हेतु, ये पुष्प सुगंधित लाए हैं ।
हे नाथ! आपकी अर्चा कर, हम सन्मति पाने आए है ।।4।।

ॐ ह्रीं श्री भयहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः
कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

व्यंजन कई सरस मनोहर खा, मम मिटी न मन की अभिलाषा ।
इन क्षुधा वेदनीय कर्मों की, जाने कैसी है परिभाषा ।।
जन्मान्तर की हो क्षुधा नाश, नैवेद्य सरस ले आए हैं ।
हे नाथ आपकी अर्चा कर, हम सन्मति पाने आए है ।।5।।

ॐ ह्रीं श्री भयहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः
क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है महामोह का अंधकार, वह मोह तिमिर विनशाएँगे ।
भव बंध कटे सद् ज्ञान जगे, भावों की ज्योति जलाएँगे ।।
हम दीप जलाकर के अपना, मद मोह नशाने आए हैं ।
हे नाथ! आपकी अर्चा कर, हम सन्मति पाने आए है ।।6।।

ॐ ह्रीं श्री भयहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः
मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम भ्रमित हुए जग भोगों में, पल भर भी शांति ना मिल पाए।
भव भव घूमें मिथ्या मति से, समता रस पान न कर पाए ।।
हम धूप दहन करके अपने, वसु कर्म जलाने आए हैं ।
हे नाथ! आपकी अर्चा कर, हम सन्मति पाने आए है ।।7।।

ॐ ह्रीं श्री भयहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः
अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ कर्मों के फल से शुभ फल, मिलता है मुक्ती फलदायी ।
फल से शुभ जीवन बनता है, निष्फल जीवन है दुखदायी ।।
फूल सरस समर्पित करके हम, शिव फल पाने को आए हैं ।
हे नाथ! आपकी अर्चा कर, हम सन्मति पाने आए है ।।8।।

ॐ ह्रीं श्री भयहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः
महामोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

सब राग त्याग कर वीतराग, भावों का अर्घ्य बनाएँगे ।
पाने अनर्घ्य पद हे स्वामी! चरणों में विशद चढ़ाएँगे ।।
यह अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ा, पाने अनर्घ्य पद आए हैं ।
हे नाथ! आपकी अर्चा कर, हम सन्मति पाने आए है ।।9।।

ॐ ह्रीं श्री भयहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः
अनर्घ्य पद प्राप्त्ये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच कल्याणक के अर्घ्य

तर्ज - बाजे कुण्डलपुर में बधाई कि....

होवे काशी में रत्नों की वृष्टि-2, कि गर्भ में पार्श्व आए-2

पार्श्वनाथजी- ला-ला-लाला-ला-2 ।।1।।

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्ण द्वितीयायां गर्भ मंगल मण्डिताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बाजे काशी नगर में बधाई-2, कि नगरी में पार्श्व जन्मे-2

पार्श्वनाथजी- ला-ला-लाला-ला-2 ।।2।।

ॐ ह्रीं पौष कृष्ण एकादश्यां जन्म मंगल मण्डिताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लिए पार्श्वनाथ जी दीक्षा-2, कि पालकी में बैठ जाते-2

पार्श्वनाथजी- ला-ला-लाला-ला-2 ।।3।।

ॐ ह्रीं पौष कृष्ण एकादश्यां तपो मंगल मण्डिताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हुए कर्म घातिया नाशी-2, प्रभु केवल ज्ञान पाए-2

पार्श्वनाथजी- ला-ला-लाला-ला-2 ।।4।।

ॐ ह्रीं चैत्र कृष्ण चतुर्थ्यां केवल ज्ञान मंगल मण्डिताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाए पार्श्वनाथजी मुक्ती-2,कि - प्रभु मोक्ष पद पाए-2

पार्श्वनाथजी- ला-ला-लाला-ला-2 ।।5।।

ॐ ह्रीं श्रावण शुक्ल सप्तम्यां मोक्ष मंगल मण्डिताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा - भयहर णमिऊण स्तोत्र है, पावन अतिशयवान।
पाठ जाप पूजन किए, हो जग का कल्याण ॥

(ताटंक छन्द)

गाढ़ कर्म के जो समूह से, पूर्ण रूप से मुक्त रहे ।
विषधर जो हैं उनके सारे, विष के नाशी आप कहे ॥
मंगल अरू कल्याणों के गृह, करते हैं उपसर्ग शमन ।
भयहर श्री जिन पार्श्वनाथ के, पद में बारम्बार नमन ॥1॥
विष को हरने वाले पावन, मंत्र रूप शुभ ज्योति पुञ्ज ।
जो नर कंठ में धारण करता, जिनवाणी का श्रेष्ठ निकुंज ॥
रोग दुष्ट ग्रह शत्रू सारे, उनके हो जाते उपशांत ।
वृद्धावस्था के भी दुःख सब, विशद शीघ्र हो जाते शांत ॥2॥
नाथ! आपके विषहारी इस, मंत्र की महिमा दूर रहे ।
मात्र चरण में वंदन का फल, बहुत बड़ा वह कौन कहे ॥
इससे मानव और पशू गति, में जो रहने वाले जीव ।
दुर्गति को वे प्राप्त न होते, प्राप्त करें वे पुण्य अतीव ॥3॥
नाथ ! आपको भली भाँति वे, पा लेते हैं जीव महान ।
मानो चिंतामणि पा लेते, या कल्पतरू पाएँ प्रधान ॥
और जीव के बिना किसी भी, विघ्न के पाते मंगलकार ।
अजर अमर पद मोक्ष रहा जो, यह पद पा हो भव से पार ॥4॥

महायशस्वी नाथ ! आप हो, अनन्त चतुष्टय वैभववान ।
भक्ती भरे हृदय से करता, प्रभु आपका मैं गुणगान ।।
पार्श्वनाथ जिनचंद्र देव हो, करो शीघ्र मेरा कल्याण ।
आप मुझे प्रत्येक भवों में, करना प्रभुजी बोधि प्रदान ।।5।।
तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथ की, सेवा को जो करे ग्रहण ।
ॐ कल्पतरू कामधेनु अरु, चिन्तामणि को करे वरण ।।
इच्छापूर्ती करने वाले, यन्त्र मन्त्र सुख के साधन ।
उस व्यक्ती के दास बनें जो, भाव सहित करते अर्चन ।।6।।
करुणाकर कहलाए हैं जो, मानतुंङ्ग आचार्य प्रधान ।
उनके द्वारा लिखा गया यह, भयहर नमिऊण स्तोत्र महान ।।
है कल्याण कारक संघों का, विशद लोक में मंगलकार ।
मानतुंग जयवंत रहें गुरू, जिन पद वंदन बारम्बार ।।7।।

दोहा - जिनकी अर्चा कर मिले, शिव पद का सोपान।
पूजे ध्याये जो विशद, पाए पद निर्वाण ।।

ॐ ह्रीं भयहर श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः
जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- नमिऊण शुभ स्तोत्र की, महिमा बड़ी विशाल।
पार्श्व प्रभु का ध्यान कर, होवे मालामाल ।।

।। इत्याशीर्वाद : पुष्पांजलि क्षिपेत ।।

नमिऊण भयहर स्तोत्र

मूल गाथा- 1

नमिऊण पणय–सुर–गण–चूड़ामणि–किरण रंजिअं मुणिणो।
चलण–जुअलं–महाभय–पणासणं–संथवं वुच्छं ॥

पद्यानुवाद

पार्श्वनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं ।
नमिऊण पार्श्व स्तोत्र के द्वारा, अतिशय महिमा गाते हैं ॥

देव झुकाते शीश अहा, कितना सुंदर दृश्य रहा।
उनके मुकुटों की मणियाँ, लटकी हों जैसे लड़ियाँ ।।
मणियों की किरणावलियाँ, जली हुई ज्यों फुलझड़ियाँ।
व्याप्त होय द्वय चरण कमल, करते हैं जग का मंगल ।।
जिनपद में करके वंदन, गाते हैं जिनका स्तवन।
महाभयों का जो नाशक, विशद ज्ञान का प्रतिभाषक ।। 1।।

मानतुङ्ग मुनि ने भक्तामर, भयहर स्तोत्र शुभ रचा महान ।
इच्छित फल हो प्राप्त हमें हम, करते चरणों विशद प्रणाम ॥

ॐ ह्रीं अर्हं महाभय आतंक विनाशन समर्थ श्री भयहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/चरणाभ्यां प्रज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

मूल गाथा - 2

सडिय–कर–चरण नह–मुह निबुड्ड–नासा विवन्न लायन्ना।
कुट्ठ–महारोगानल–फुलिंग–निद्दट्ठ–सव्वंगा ॥

पद्यानुवाद

पार्श्वनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।
नमिऊण पार्श्व स्तोत्र के द्वारा, अतिशय महिमा गाते हैं ॥

हाथ पैर नख मुख सारे, सड़ गये हैं जिनके न्यारे।
तथा नाशिका भी जानो, धँसी हुई दिखती मानो ।।
जिनकी सुन्दरता प्यारी, नाश हो गई हो सारी।
कुष्ठ रोग की आग जले, उठे फुल्लंगे और जले ।।
जिनकी देह के अंगों से, जलते हों सर्वांगो से।
ऐसे महारोग वाले, मानो हों मरने वाले ।।2।।

मानतुंङ्ग मुनि ने भक्तामर, भयहर स्तोत्र शुभ रचा महान।
इच्छित फल हो प्राप्त हमें हम, करते चरणों विशद प्रणाम ॥

ॐ ह्रीं अर्हं कुष्ठ महारोगानल विनाशन समर्थ श्री भयहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/चरणाभ्यां प्रज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

मूल गाथा-3

ते तुह चलणाराहण–सलिलंजलि–सेय–वड्डियच्छाया।
वण–दण–दड्ढा गिरि–पायव्व पत्ता पुणो लच्छिं॥

पद्यानुवाद

पार्श्वनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते है।
नमिऊण पार्श्व स्तोत्र के द्वारा, अतिशय महिमा गाते हैं॥

प्रभो! आपके चरणों के, आराधन स्मरणों के।
जल के अंजलि मात्र लिए, कर से सिंचन आप किए॥
वृद्धिंगत कांती वाले, जलें वृक्ष काले-काले।
वन अग्नी से हो जाते, गिरि तरु में कोंपल आते॥
पर्वत के वृक्षों जैसे, हरे भरे दिखते वैसे।
पुनः देह शोभा पाए, कंचन सा तन हो जाए॥3॥

मानतुंङ्ग मुनि ने भक्तामर, भयहर स्तोत्र शुभ रचा महान।
इच्छित फल हो प्राप्त हमें हम, करते चरणों विशद प्रणाम॥

ॐ ह्रीं अर्हं रोगादिक मानसिक संताप विनाशन समर्थ श्री भयहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/चरणाभ्यां प्रज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

मूल गाथा-4

दुव्वाय–खुभिय जल–निहि, उब्भड–कल्लोल–भीसणारावे
संभंत–भय–विसंठुल–निज्जामय–मुक्क–वावारे ।।

पद्यानुवाद

पार्श्वनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।
नमिऊण पार्श्व स्तोत्र के द्वारा, अतिशय महिमा गाते हैं ।।

इस जग के मानव सारे, नित्य पार्श्व जिनको प्यारे।
चरण युगल में नमते हैं, हृदयांबुज में जमते है ।।
दुष्ट पवन के झोकों से, चुभती जिनकी नोकों से।
उच्च तरंगों के कारण, दुखकर होवे जो दारुण ।।
भीषण ध्वनि से युक्त यहाँ, काँप रहे हो लोग जहाँ।
एवं जो भयभीत हुए, जो अति चंचल चीत हुए ।।4।।

मानतुंङ्ग मुनि ने भक्तामर, भयहर स्तोत्र शुभ रचा महान।
इच्छित फल हो प्राप्त हमें हम, करते चरणों विशद प्रणाम ।।

ॐ ह्रीं अर्हं जलोदर आदिक समुद्रभय विनाशन समर्थ श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/चरणाभ्यां प्रज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

मूल गाथा-5

अविदलिअ-जाण-वत्ता, खणेण पावंति इच्छिअं कूलं।
पास-जिण-चलण-जुअलं-निच्चं चिअ जे नमंति नरा॥

पद्यानुवाद

पार्श्वनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।
नमिऊण पार्श्व स्तोत्र के द्वारा, अतिशय महिमा गाते हैं॥

भय से हो विक्षुब्ध कोई, हड़बड़ाए सम होय सोई।
नाविक भी घबड़ाय जहाँ, अपना साहस खोय वहाँ॥
ऐसे सागर में कोई, फँसा हुआ होवे सोई।
पार्श्व प्रभु को जो ध्याए, मन से महिमा को गाए॥
क्षण भर में ही वह प्राणी, बुद्धी पाए कल्याणी।
वह भी तट पर आ जाए, अभय दान प्राणी पाए॥5॥

मानतुंङ्ग मुनि ने भक्तामर, भयहर स्तोत्र शुभ रचा महान।
इच्छित फल हो प्राप्त हमें हम, करते चरणों विशद प्रणाम॥

ॐ ह्रीं मनोवांछित फल प्रदाता श्री भयहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/चरणाभ्यां प्रज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

मूल गाथा-6

खर-पवणुद्धुय-वण-दव-जालावलि-मिलिय-सयल-दुम-गहणे।
डज्झंत-मुद्ध-मय-वहु-भीसण-रव-भीसणम्मि वणे ॥

पद्यानुवाद

पार्श्वनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।
नमिऊण पार्श्व स्तोत्र के द्वारा, अतिशय महिमा गाते हैं॥

तेज पवन आ जाने से, वेग बहुत बढ़ जाने से।
दावानल की ज्वालाएँ, जैसे झण्डे लहराएँ॥
तरु संपर्क में आने से, दुर्गम पथ हो जाने से।
भोली हिरणियाँ आने से, उनके भी जल जाने से॥
भीषण ध्वनियों के कारण, दुखकर होवे उच्चारण।
महाभयंकर हो भारी, छाई हुई हो अंधियारी॥6॥

मानतुंङ्ग मुनि ने भक्तामर, भयहर स्तोत्र शुभ रचा महान।
इच्छित फल हो प्राप्त हमें हम, करते चरणों विशद प्रणाम॥
ॐ ह्रीं अर्हं दावानल भय विनाशन समर्थ श्री भयहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/चरणाभ्यां प्रज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

मूल गाथा-7

जग–गुरूणो कम जुअलं, निव्वाविअ–सयल–तिहुअणाभोअं।
जे संभरति मणुआ, न कुणइ जलणो भयं तेसिं ॥

पद्यानुवाद

पार्श्वनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।
नमिऊण पार्श्व स्तोत्र के द्वारा, अतिशय महिमा गाते हैं॥

ऐसे वन में भी मानो, शीतल किया होय जानो।
सकल चराचर हो कोई, त्रिभुवन का मैदान सोई॥
ऐसे जगत गुरू प्यारे, जग जन के तारण हारे।
उनके चरणों में आए, भाव से स्तुतियाँ गाए॥
करे स्मरण जो कोई, उनके लिए विशद सोई।
अग्नी भय भी नश जाए, अभय शीलता को पाए॥7॥

मानतुंङ्ग मुनि ने भक्तामर, भयहर स्तोत्र शुभ रचा महान।
इच्छित फल हो प्राप्त हमें हम, करते चरणों विशद प्रणाम॥

ॐ ह्रीं अर्हं समस्त विघ्न अग्निभय विनाशन समर्थ श्री भयहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/चरणाभ्यां प्रज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

मूल गाथा-8

विलसंत-भोग-भीसण-फुरिआरूण-नयण-तरल-जीहालं।
उग्ग-भुअंगं नव-जलय-सत्थहं-भीसणायारं ॥

पद्यानुवाद

पार्श्वनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।
नमिऊण पार्श्व स्तोत्र के द्वारा, अतिशय महिमा गाते हैं॥

तीन लोक में स्वरूपी, आपके नामाक्षर रूपी।
प्रकट रूप से रहे खड़े, मंत्र रूप से रहे बड़े॥
तथा सर्प का विषम कहाँ , विष संबंधी वेग रहा।
उसको जिनने दूर किया, मानो दूर ही फेंक दिया॥
ऐस नर को भी जानो, शांती मिल जाए मानो।
प्रभु की महिमा है ऐसी, और नहीं दिखती वैसी ॥8॥

मानतुंङ्ग मुनि ने भक्तामर, भयहर स्तोत्र शुभ रचा महान।
इच्छित फल हो प्राप्त हमें हम, करते चरणों विशद प्रणाम॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वभय विनाशन समर्थ श्री भयहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/चरणाभ्यां प्रज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

मूल गाथा-9

मन्नंति कीड–सरिसं दूर–परिच्छुड्ढ–विसम–विस–वेगा।
तुह नामक्खर–फुड–सिद्ध–मंत–गुरुआ नरा लोए ॥

पद्यानुवाद

पार्श्वनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।
नमिऊण पार्श्व स्तोत्र के द्वारा, अतिशय महिमा गाते हैं ॥

फण फैलाए हों काले, चमकीले नेत्रों वाले।
भीषण हो जो भयकारी, जो डरावने हो भारी ।।
चंचल जिह्वा युक्त कहे, काले मेघ समान रहे।
भीषण जो आकृति वाले, उग्र भुजंग रहे काले ।।
उन्हें क्षुद्र कीड़े जैसे, भक्त सभी माने वैसे।
प्रभु की महिमा है न्यारी, विशद रही अतिशयकारी ।।9।।

मानतुंङ्ग मुनि ने भक्तामर, भयहर स्तोत्र शुभ रचा महान।
इच्छित फल हो प्राप्त हमें हम, करते चरणों विशद प्रणाम ॥

ॐ ह्रीं अर्हं सिद्ध मंत्र सर्व कार्य सिद्धिकारक श्री भयहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/चरणाभ्यां प्रज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

मूल गाथा- 10

अडवीसु भिल्ल-तक्कर-पुलिंद-सद्दूल-सद्द-भीमासु।
भय-विहुर-वुन्न-कायर-उल्लूरिय-पहिय-सत्थासु॥

पद्यानुवाद

पार्श्वनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।
नमिऊण पार्श्व स्तोत्र के द्वारा, अतिशय महिमा गाते हैं॥

भील क्रूर तस्कर प्राणी, हो असभ्य जो अज्ञानी।
वन्य जाति के लोग रहे, भील दुष्टतापूर्ण रहे॥
तेंदुए की ध्वनि से भारी, रहे भयंकर भयकारी।
भय से विह्वल हो कोई, मुँह लटकाए हो सोंई॥
कातर और लुटे जैसे, पथिक समूह पिटे जैसे।
विद्यमान होवे ऐसी, स्थिति उनकी हो वैसी॥10॥

मानतुंङ्ग मुनि ने भक्तामर, भयहर स्तोत्र शुभ रचा महान।
इच्छित फल हो प्राप्त हमें हम, करते चरणों विशद प्रणाम॥

ॐ ह्रीं अर्हं दुष्ट क्रूर कृत भय विनाशन समर्थ श्री भयहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/चरणाभ्यां प्रज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

मूल गाथा- 11

अविलुत्त–विहव–सारा, तुह नाह! पणाममत्त–वावारा।
ववगय–विग्घा सिग्घं पत्ता हिय–इच्छियं ठाणं ॥

पद्यानुवाद

पार्श्वनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।
नमिऊण पार्श्व स्तोत्र के द्वारा, अतिशय महिमा गाते हैं॥

वनों अटवियों में कोई, भटक रहे होवें सोई।
नाथ ! आपके चरण युगल, वंदन करता चरण कमल ।।
मानव कोई भी जानो, हो अधीर मन से मानो।
नहीं लुटा वैभव रूपी, सार सौर्य निजस्वरूपी ।।
बीत चुके हैं विघ्न सभी, जिनके ऐसे लोग कभी।
हृदय प्रिय स्थान कहा, पा जाए वह भक्त अहा ।।11।।

मानतुंङ्ग मुनि ने भक्तामर, भयहर स्तोत्र शुभ रचा महान।
इच्छित फल हो प्राप्त हमें हम, करते चरणों विशद प्रणाम॥

ॐ ह्रीं अर्हं लूट मारी चोर भय विनाशन समर्थ श्री भयहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/चरणाभ्यां प्रज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

मूल गाथा- 12

पज्जलिआणल-नयणं, दूर-वियारिअ-मुहं महाकायं।
नह-कुलिस-घाय-विअलिअ-गइंद-कुंभत्थलाभोअं॥

पद्यानुवाद

पार्श्वनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।
नमिऊण पार्श्व स्तोत्र के द्वारा, अतिशय महिमा गाते हैं॥

जलती हुई अग्नि जैसे, लाल नेत्र दिखते वैसे।
रहे विशालकायधारी, दिखते है जो भयकारी॥
वज्रपात सम नख पाए, जो प्रहार करते गाए।
गज के कुंभ स्थल रूपी, क्षेत्र विभाजन स्वरूपी॥
क्रोध युक्त सिंहराज रहे, भारी जो खूंखार कहे।
गिने नहीं उनको भाई, भक्ती की ये प्रभुताई॥12॥

मानतुंङ्ग मुनि ने भक्तामर, भयहर स्तोत्र शुभ रचा महान।
इच्छित फल हो प्राप्त हमें हम, करते चरणों विशद प्रणाम॥

ॐ ह्रीं अर्हं सिंहभय निवारण समर्थ श्री भयहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/चरणाभ्यां प्रज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

मूल गाथा- 13

पणय–ससंभम–पत्थिव–नह–मणि–माणिक्क–पडिअ–पडिमस्स।
तुह वयण–पहरण–धरा सीहं कुद्धंपि न गणंति ।।

पद्यानुवाद

पार्श्वनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।
नमिऊण पार्श्व स्तोत्र के द्वारा, अतिशय महिमा गाते हैं ।।

जिनके नख रूपी मड़ियों, माणिक्यों की भी लड़ियों।
जिन पर विनत और सम्भ्रम, आदरपूर्वक जो संक्रम ।।
भयपूर्वक राजाओं के, तन हीन सभी बाधाओं से।
साष्टांग देह पतित होते, मन का जो कालुष खोते ।।
ऐसे आपके हे स्वामी!, वचनायुध गाए नामी।
जो भी हैं उनके धारी, होते न वे भयकारी ।।13।।

मानतुंङ्ग मुनि ने भक्तामर, भयहर स्तोत्र शुभ रचा महान।
इच्छित फल हो प्राप्त हमें हम, करते चरणों विशद प्रणाम ।।

ॐ ह्रीं अर्हं शस्त्रास्त्र भय विनाशन समर्थ श्री भयहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/चरणाभ्यां प्रज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

मूल गाथा- 14

ससि–धवल–दंत–मुसलं दीह करूल्लाल–विड्ढउच्छाहं।
महुपिंग–नयण–जुअलं ससलिल–नव–जल–हरायारं॥

पद्यानुवाद

पार्श्वनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।
नमिऊण पार्श्व स्तोत्र के द्वारा, अतिशय महिमा गाते हैं॥

हे मुनियों के नाथ! अहा, तव चरणों शुभ माथ रहा।
जो भी नर जग में मंगल, प्राप्त प्रतिष्ठा चरण युगल॥
समीचीन जो लीन रहे, धवल चंद सम श्वेत कहे।
दंत रूप मूसल वाले, दिखते हैं जो मतवाले॥
लम्बी सूंड रही भारी, फटकारों की झंकारी।
वृद्धी प्राप्त हुए भारी, हो उत्साह युक्त न्यारी॥14॥

मानतुंङ्ग मुनि ने भक्तामर, भयहर स्रोत शुभ रचा महान।
इच्छित फल हो प्राप्त हमें हम, करते चरणों विशद प्रणाम॥

ॐ ह्रीं अर्हं गजेन्द्र उपद्रव कृत भय विनाशन समर्थ श्री भयहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/चरणाभ्यां प्रज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

मूल गाथा- 15

भीमं महागइंदं, अच्चासन्नंपि ते न विगणंति।
ते तुम्ह चलण–जुअलं, मणिवइ ! तुंगं समल्लीणा ।।

पद्यानुवाद

पार्श्वनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।
नमिऊण पार्श्व स्तोत्र के द्वारा, अतिशय महिमा गाते हैं ।।

मधु सम पिंगल रंग वाले, नयन युगल हों मतवाले।
जल पूरित नूतन प्यारे, मेघ समान रहे न्यारे ।।
कृष्ण वर्ण के शुभकारी, एवं जो मंगलकारी।
निकट पूर्णतः जो आए, मानो भय जो दिखलाए ।।
भीम भयंकर भी गज को, गिने नहीं मानो अज को।
ऐसी शक्ती को पाए, विजयश्री को पा जाए ।।15।।

मानतुंङ्ग मुनि ने भक्तामर, भयहर स्तोत्र शुभ रचा महान।
इच्छित फल हो प्राप्त हमें हम, करते चरणों विशद प्रणाम ।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रताड़ना भय विनाशन समर्थ श्री भयहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/चरणाभ्यां प्रज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

मूल गाथा- 16

समरम्मि तिक्ख–खग्गा, भिग्घाय–पविद्ध उद्धुय कबंधे।
कुंत–विणिभिन्न–करि–कलह–मुक्क–सिक्कार पउरम्मि ॥

पद्यानुवाद

पार्श्वनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।
नमिऊण पार्श्व स्तोत्र के द्वारा, अतिशय महिमा गाते हैं ॥

पाप समनकर हे पारस! जिनवर जग के उद्धारक।
जहाँ नुकीली तलवारें, क्रोधित होकर के मारें ॥
जिससे प्रेरित हो कम्पन, भयाक्रांत जिससे हो मन।
मस्तक हीन हुए धड़ से, घोड़े-हाथी पे चढ़के ॥
और जहाँ पर मारे भाल, फाड़ें हैं हाथी के गाल।
चीत्कार की ध्वनि निकाल, दिखते हैं गज जहाँ विशाल ॥16॥

मानतुंङ्ग मुनि ने भक्तामर, भयहर स्तोत्र शुभ रचा महान।
इच्छित फल हो प्राप्त हमें हम, करते चरणों विशद प्रणाम ॥

ॐ ह्रीं अर्हं युद्ध भय विनाशन समर्थ श्री भयहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/चरणाभ्यां प्रज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

मूल गाथा- 17

णिज्जिअ–दप्पुद्धर–रिउ–नरिंद–निवहा भडा जसं धवलं।
पावंति पाव–पसमिण–पास–जिण ! तुहप्पभावेण ।।

पद्यानुवाद

पार्श्वनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।
नमिऊण पार्श्व स्रोत के द्वारा, अतिशय महिमा गाते हैं।।

ऐसे युद्ध में हे भगवान! करते जो निज का रसपान।
तव प्रभाव से जीते जान, करने को निज का कल्याण।।
गर्वोन्नत शत्रु जो भूप, क्रूर दिखाएँ अपना रूप।
हो समूह में जिनने सर्व, जीते योद्धाओं के गर्व।।
ऐसे योद्धा रहे महान, यश फैला है सर्व जहान।
प्राप्त करें वे ज्ञानी जीव, पुण्यवान वे होंय अतीव।।17।।

मानतुंङ्ग मुनि ने भक्तामर, भयहर स्तोत्र शुभ रचा महान।
इच्छित फल हो प्राप्त हमें हम, करते चरणों विशद प्रणाम।।

ॐ ह्रीं अर्हं आकाश भय विनाशन समर्थ श्री भयहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/चरणाभ्यां प्रज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

मूल गाथा- 18

रोग–जल–जलण–विसहर–चोरारि–मइंद–गय–रण–भयाइं।
पास–जिण–नाम–संकित्तेणेण पसमंति सव्वाइं॥

पद्यानुवाद

पार्श्वनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।
नमिऊण पार्श्व स्तोत्र के द्वारा, अतिशय महिमा गाते हैं॥

रोग भयंकर हो जलधार, अग्नी का हो जहाँ प्रसार।
फण फैलाए सर्प महान, चोर घूमते होवें मान॥
शत्रू घूमें चारों ओर, सिंह दहाड़े भाव विभोर।
हाथी भी करते चिंघाड़, रण संबंधी भय से त्राण॥
पार्श्व प्रभु का जपते नाम, भाव सहित पद करें प्रणाम।
हो जाते है शांत विशेष, महिमामय हैं प्रभू अशेष॥18॥

मानतुंङ्ग मुनि ने भक्तामर, भयहर स्तोत्र शुभ रचा महान।
इच्छित फल हो प्राप्त हमें हम, करते चरणों विशद प्रणाम॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वरागादि भय विनाशन समर्थ श्री भयहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/चरणाभ्यां प्रज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

मूल गाथा- 19

एवं महाभय-हरं, पास-जिणिंदस्स संथवमुआरं।
भविअ-जणाणंदयरं, कल्लाण-परंपर-निहाणं ॥

पद्यानुवाद

पार्श्वनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।
नमिऊण पार्श्व स्तोत्र के द्वारा, अतिशय महिमा गाते हैं॥

इस प्रकार महाभयहार, तीन लोक में मंगलकार।
पार्श्वनाथ पावन तीर्थेश, महिमाशाली रहे विशेष॥
उत्तम संस्तव रहा महान, करे भव्यजन का कल्याण।
भवि जीवों का आनंदकार, शांतिदायक अपरंपार॥
है कल्याणमयी शुभकार! परंपरागत शुभ भंडार।
अहो रात्रि जो करते पाठ, उनके होवें ऊँचे ठाठ॥19॥

मानतुंङ्ग मुनि ने भक्तामर, भयहर स्तोत्र शुभ रचा महान।
इच्छित फल हो प्राप्त हमें हम, करते चरणों विशद प्रणाम॥

ॐ ह्रीं अर्हं समस्त विधि संसार भय विनाशन समर्थ श्री भयहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/चरणाभ्यां प्रज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

मूल गाथा-20

राय-भय-रक्खस-कुसुमिण-दुस्सउण-रिक्ख पीडासु।
संझासु दोसु पंथे, उवसग्गे तह रयणीसु ॥

पद्यानुवाद

पार्श्वनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।
नमिऊण पार्श्व स्तोत्र के द्वारा, अतिशय महिमा गाते हैं ॥

होय राज्य भय इसी प्रकार, अन्य कोई भय का संचार।
राक्षस यक्ष आदिक भय होय, और अपशकुन कोई होय ।।
दुःस्वप्नों से होवे खेद, स्वजन डालते घर में भेद।
हो नक्षत्र कोई पीड़ावान, जिनसे होवे सुख की हान ।।
रात्री या द्वय संध्या होय, काल रात का भी हो सोय।
उपसर्गों में प्रभु को ध्याय, छुटकारा उनसे पा जाय ।।20।।

मानतुंङ्ग मुनि ने भक्तामर, भयहर स्तोत्र शुभ रचा महान।
इच्छित फल हो प्राप्त हमें हम, करते चरणों विशद प्रणाम ॥

ॐ ह्रीं अर्हं राजग्रह भूत पिशाच स्वप्नादि सकल भय विनाशन समर्थ
श्री भयहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/चरणाभ्यां प्रज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

मूल गाथा-21

जो पढइ जो अ निसुणइ, ताणं कइणो य माणतुंगस्स।
पासो पावं पसमेउ, सयल-भुवणच्चियाचलणो ।।

पद्यानुवाद

पार्श्वनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।
नमिऊण पार्श्व स्तोत्र के द्वारा, अतिशय महिमा गाते हैं ।।

जो स्तोत्र पढ़े शुभकार, सुने ध्यान से बारम्बार।
उसका होवे बेड़ापार, एवं पाए शांति अपार।।
मानतुंङ्ग जी है कविराज, जैन धर्म के गाए ताज।
लगे हुए हैं जो भी पाप, मन के जो भी हैं संताप।।
सर्व जगत में पूजित जान, आचारी पारस भगवान।
का हम करते हैं यशगान, जग में शांती करें प्रदान।।21।।

मानतुंङ्ग मुनि ने भक्तामर, भयहर स्तोत्र शुभ रचा महान।
इच्छित फल हो प्राप्त हमें हम, करते चरणों विशद प्रणाम ।।

ॐ ह्रीं अर्हं समस्त विध पीड़ा भय विनाशन समर्थ श्री भयहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/चरणाभ्यां प्रज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

मूल गाथा-22

उवसग्गंते कमठाऽसुरम्मि झाणाउ जो न संचलिओ।
सुर–नर–किन्नर–जुवईहिं संथुओ जयउ पास–जिणो ।।

पद्यानुवाद

पार्श्वनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।
नमिऊण पार्श्व स्तोत्र के द्वारा, अतिशय महिमा गाते हैं ।।

कमठासुर उपसर्ग किया, नहीं प्रभुजी ध्यान दिया।
ध्यानालीन रहे स्वामी, त्रिभुवन पति अन्तर्यामी ।।
ध्यान से विचलित हुए नहीं, भटके न जो अन्य कहीं।
ऐसे देव और मानव, किन्नर और रहे दानव ।।
किन्नरियों से जो वंदित, तीन लोक में जो अर्चित।
हों जयन्त पार्श्व स्वामी, जिनके पद में प्रणमामी ।।22।

मानतुंङ्ग मुनि ने भक्तामर, भयहर स्तोत्र शुभ रचा महान।
इच्छित फल हो प्राप्त हमें हम, करते चरणों विशद प्रणाम ।।

ॐ ह्रीं अर्हं समस्त विधि उपसर्ग भय विनाशन समर्थ श्री भयहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/चरणाभ्यां प्रज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

मूल गाथा-23

एअस्स मज्झयारे, अट्ठारस-अक्खेरेहि जो मंतो।
जो जाणइ सो झायइ, परम-पयत्थं फुडं पासं।।

पद्यानुवाद

पार्श्वनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।
नमिऊण पार्श्व स्तोत्र के द्वारा, अतिशय महिमा गाते हैं।।

पावन यह स्तोत्र कहा, विशद धर्म का स्रोत रहा।
इनके मध्य मंत्र आए, अतिशय पावन कहलाए।।
वर्ण अठारह वाला जो, जाने तो वह ज्ञानी हो।
पूज्य परम पद के धारी, पार्श्व प्रभुजी अविकारी।।
विशद रूप से ध्यान करे, निज का वह कल्याण करे।
जिन स्तोत्र है मनहारी, अतिशय कर मंगलकारी।।23।।

मानतुंङ्ग मुनि ने भक्तामर, भयहर स्तोत्र शुभ रचा महान।
इच्छित फल हो प्राप्त हमें हम, करते चरणों विशद प्रणाम।।

ॐ ह्रीं अर्हं कुमन्त्रकृत उपद्रव भय विनाशन समर्थ श्री भयहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/चरणाभ्यां प्रज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

मूल गाथा-24

पासह–समरण जो, कुणइ संतुट्ठे हियएण।
अट्ठुत्तर–सय–वाहि–भय नासइ तस्स दूरेण (खणेण)॥

पद्यानुवाद

पार्श्वनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।
नमिऊण पार्श्व स्तोत्र के द्वारा, अतिशय महिमा गाते हैं॥

जो मनुष्य जग में गाए, संतुष्ट हृदय से कहलाए।
हो प्रसन्न मन से भाई, जग में फैली प्रभु ताई॥
पार्श्व प्रभु को ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।
उनके भय जो भी गाए, अष्टोत्तर शत् कहलाए॥
द्रुतगति से क्षय जाते हैं, कोई न रह पाते हैं।
ऐसे जिन प्रभु को ध्याएँ, चरण कमल में सिरनाएँ॥24॥

मानतुंङ्ग मुनि ने भक्तामर, भयहर स्तोत्र शुभ रचा महान।
इच्छित फल हो प्राप्त हमें हम, करते चरणों विशद प्रणाम॥

ॐ ह्रीं अर्हं अष्टोत्तर शत् व्याधि भय विनाशन समर्थ श्री भयहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/चरणाभ्यां प्रज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

पूर्णार्घ्य

पार्श्व प्रभु की अर्चा पावन, जग में मंगलकारी है ।
सुख शांति सौभाग्य प्रदायक, जगदुख संकटहारी है ।।
भव्य जीव गुण गाने वाले, धन्य-धन्य हो जाते हैं ।
मोक्ष मार्ग के राही बनकर, सिद्ध सदन को पाते हैं ।।

दोहा – **पार्श्व प्रभु पद पूजकर, होते कर्म विनाश।**
राही बनते मोक्ष के, पाते शिवपुर वास ।।

ॐ ह्रीं भयहर ! उपसर्ग विजेता ! चिन्तामणि
श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा !

जाप्य – **जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं अर्हं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय विश्व–उपद्रव भय प्रशमाय नमो नमः ।**

अथवा

ॐ ह्रीं भयहर ! अर्हं पास जिण णाम संकित्तेणेण पसमंति सव्वाइं ।

अथवा

ॐ ह्रीं नमिऊण पासं विसहर विसह जिण फुलिंग ह्रीं श्रीं नमः ।

जयमाला

दोहा- यश कीर्ति पाए प्रभू, पार्श्वनाथ भगवान ।
यश गाते जिनका यहाँ, होके श्रद्धावान ।।

(शम्भू छंद)

मंत्री पुत्र कमठ मरूभूति, कमठ रहा अज्ञानी घोर ।
नीतिवंत रहा मरुभति, करता मन को भाव विभोर ।।
मरुभूति मंत्री पद पाया, किया प्रजा का जो उपकार ।
मोह से मोहित हो नारी से, किया कमठ ने अत्याचार ।।1।।

दंडित हुआ नृपति के द्वारा, कुत्सित भेष लिया तप धार।
भ्रात स्नेह हृदय में जागा, मरुभूति के अपरम्पार ।।
कमठ शिला लेकर हाथों में, खड़ा हुआ कर ऊपर हाथ।
समझाने पहुँचा भाई को, मरुभति जब जोड़ के हाथ ।।2।।
मरुभूति झुकता भाई के, आगे पड़ने हेतु पैर ।
शिला पटक दी क्रोधित होकर, मन में धारण करके बैर ।।
मरूभूति गज हुआ मरण कर, पाया जो सम्यक् श्रद्धान ।
मुनि अरविन्द नृपति थे जिसके, दे उपदेश जगाया ज्ञान ।।3।।
वैर मानकर के दशभव तक, किया कमठ ने बहु उपसर्ग।
समता धारे पार्श्व प्रभुजी, कर्म नाश पाए अपवर्ग ।।
पार्श्व प्रभु का नाम जाप ही, विघ्नों का करता है नाश।
पूजा अर्चा कर हो जाती, भवि जीवों की पूरी आस ।।
रोग शोक तन की पीड़ाएँ, भी हो जाती है उपशांत ।
प्रभु के कृपा पात्र बनने से, भाव स्वयं हो जाते शांत ।।
मात-पिता से बढ़कर होत, जो कहलाते पालनहार ।
इस भव के सुख देकर करते, हैं जो भव सिंधु से पार ।।

दोहा- जिनका यश गाकर बने, जीव स्वयं यशवान।
अर्चा करके भाव से, होय विशय कल्याण ।।

ऊँ ह्रीं भयहर ! उपसर्ग विजेता ! चिन्तामणि श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः समुच्चय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा - विश्व शांति कर लोक में, कहे गये भगवान।
शिव पथ गामी जो बने, करके जग कल्याण ।।

इत्याशीर्वाद...

श्री पार्श्वनाथ चालीसा

दोहा - पार्श्वनाथ भगवान हैं, मंगलमयी महान।
विशद भाव से हम यहाँ, करते हैं यशगान॥
चालीसा गाते यहाँ, होके भाव विभोर।
हरी भरी खुशहाल हो, धरती चारों ओर॥

(चौपाई)

जय-जय पार्श्वनाथ हितकारी, महिमा तुमरी जग में न्यारी ॥1॥
तुम हो तीर्थंकर पद धारी, तीन लोक में मंगलकारी ॥2॥
काशी नगरी है मनहारी, सुखी जहाँ की जनता सारी ॥3॥
राजा अश्वसेन कहलाए, रानी वामा देवी गाए ॥4॥
जिनके गृह में जन्में स्वामी, पार्श्वनाथ जिन अन्तर्यामी ॥5॥
देवों ने तब रहस रचाया, पाण्डुक वन में न्हवन कराया ॥6॥
वन में गये घूमने भाई, तपसी प्रभु को दिया दिखाई ॥7॥
पंचाग्नि तप करने वाला, अज्ञानी था भोला भाला ॥8॥
तपसी तुम क्यों आग जलाते, हिंसा करके पाप कमाते ॥9॥
नाग युगल जलते हैं कारे, मरने वाले हैं बेचारे ॥10॥
तपसी ने ले हाथ कुल्हाड़ी, जलने वाली लकड़ी फाड़ी ॥11॥
सर्प देश तपसी घबराया, प्रभु ने उनको मंत्र सुनाया ॥12॥
नाग युगल मृत्यू को पाए, पद्मावती धरणेन्द्र कहाए ॥13॥
तपसी मरकर स्वर्ग सिधाया, संवर नाम देव ने पाया ॥14॥
प्रभू बाल ब्रह्मचारी गाए, संयम पाकर ध्यान लगाए ॥15॥
पौष कृष्ण एकादशि पाए, अहीक्षेत्र में ध्यान लगाए ॥16॥
इक दिन देव वहाँ पर आया, उसके मन में बैर समाया ॥17॥
किए कई उपसर्ग निराले, मन को कम्पित करने वाले ॥18॥
फिर भी ध्यान मग्न थे स्वामी, बनने वाले थे शिवगामी ॥19॥

धरणेन्द्र पद्मावति तब आए, प्रभु के पद में शीश झुकाए ।।20।।
पद्मावती ने फण फैला या, उस पर प्रभु जी को बैठाया ।।21।।
धरणेन्द्र ने माया दिखाई, फण का छत्र लगाया भाई ।।22।।
चैत कृष्ण की चौथ बताई, विजय हुई समता की भाई ।।23।।
प्रभु ने केवल ज्ञान जगाया, समवशरण देवेन्द्र रचाया ।।24।।
सवा योजन विस्तार बताए, धनुष पचास गंध कुटि पाए ।।25।।
दिव्य देशना प्रभू सुनाए, भव्यों को शिवमार्ग दिखाए ।।26।।
गणधर दश प्रभु के बतलाए, गणधर प्रथम स्वयंभू गाए ।।27।।
गिरि सम्मेद शिखर प्रभु आए, स्वर्ण भद्र शुभ कूट बताए ।।28।।
योग निरोध प्रभू जी पाए, एक माह का ध्यान लगाए ।।29।।
श्रावण शुक्ल सप्तमी आई, खड्गासन से मुक्ती पाई ।।30।।
श्रावक प्रभु के पद में आते, अर्चा करके महिमा गाते ।।31।।
भक्ती से जो ढोक लगाते, भोगी भोग संपदा पाते ।।32।।
पुत्रहीन सुत पाते भाई, दुखिया पाते सुख अधिकाई ।।33।।
योगी योग साधना पाते, आत्म ध्यान कर शिवसुख पाते ।।34।।
पूजा करते हैं नर-नारी, गीत भजन गाते मनहारी ।।35।।
हम भी यह सौभाग्य जगाएँ, बार-बार जिन दर्शन पाएँ ।।36।।
पार्श्व प्रभू के अ तिशयकारी, तीर्थ बने कई हैं मनहारी ।।37।।
विशद तीर्थ जो हैं शुभकारी, जिनके प द में ढोक हमारी ।।38।।
भव्य जीव जो दर्शन पाते, अतिशयकारी पुण्य कमाते ।।39।।
उभयलोक में वे सुख पाते, अनुक्रम से शिव सुख पा जाते ।।40।।

दोहा - पाठ करें चालीस दिन, दिन में चालीस बार
तीन योग से पार्श्व का, पावें सौख्य अपार
सुख-शांती सौभाग्य युत, तन हो पूर्ण निरोग
'विशद' ज्ञान को प्राप्त कर, पावें शिवपद भोग

समुच्चय महार्घ्य

अर्हत् सिद्धाचार्य उपाध्याय, सर्व साधु के चरण नमन ।
जैनागम जिन चैत्य जिनालय, जैन धर्म को शत् वन्दन ॥
सोलह कारण धर्म क्षमादिक, रत्नत्रय चौबिस तीर्थेश ।
अतिशय सिद्धक्षेत्र नन्दीश्वर, की अर्चा हम करें विशेष ॥

दोहा-अष्ट द्रव्य का अर्घ्य यह, 'विशद' भाव के साथ ।
चढ़ा रहे त्रययोग से, झुका चरण में माथ॥

ॐ ह्रीं श्री अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, सर्वसाधु, सरस्वती देव्यै, सोलहकारण भावना, दशलक्षण धर्म, रत्नत्रय धर्म, त्रिलोक स्थित कृत्रिम-अकृत्रिम चैत्य चैत्यालय, नन्दीश्वर, पंचमेरु सम्बन्धी चैत्य-चैत्यालय, कैलाश गिरि, सम्मेद शिखर, गिरनार, चम्पापुर, पावापुर आदि निर्वाण क्षेत्र, अतिशय क्षेत्र, तीस चौबीसी, तीन कम नौ करोड़ गणधरादि मुनिश्वरेभ्यो समुच्चय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(पुष्पक्षेपण करते हुए शांति पाठ बोलें)

शांतिपाठ

शांतिनाथ शांति के दाता, भवि जीवों के भाग्य विधाता ।
परम शांत मुद्रा जो धारे, जग जीवों के तारण हारे ॥
शरण आपकी जो भी आते, वे अपने सौभाग्य जगाते ।
शांतिपाठ पूजा कर गाएँ, पुष्पांजलि करशांतिजगाएँ ॥
जिन पद शांती धार कराएँ, जीवन में सुख शांति पाएँ ।
जीवों को सुख शांति प्रदायी, धर्म सुधामृत के वरदायी ॥
शांतिनाथ दुख दारिद्र नाशी, सम्यक्दर्शन ज्ञान प्रकाशी ।
राजा प्रजा भक्त नर-नारी, भक्ति करें सब मंगलकारी ॥

अर्हत् सिद्धाचार्य उपाध्याय, सर्व साधु के चरण नमन ।
जैनागम जिन चैत्य जिनालय, जैन धर्म को शत् वन्दन ॥
सोलह कारण धर्म क्षमादिक, रत्नत्रय चौबिस तीर्थेश ।
अतिशय सिद्धक्षेत्र नन्दीश्वर, की अर्चा हम करें विशेष ॥

दोहा-अष्ट द्रव्य का अर्घ्य यह, `विशद` भाव के साथ ।
चढ़ा रहे त्रययोग से, झुका चरण में माथ॥

ॐ ह्रीं श्री अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, सर्वसाधु, सरस्वती देव्यै, सोलहकारण भावना, दशलक्षण धर्म, रत्नत्रय धर्म, त्रिलोक स्थित कृत्रिम-अकृत्रिम चैत्य चैत्यालय, नन्दीश्वर, पंचमेरु सम्बन्धी चैत्य-चैत्यालय, कैलाश गिरि, सम्मेद शिखर, गिरनार, चम्पापुर, पावापुर आदि निर्वाण क्षेत्र, अतिशय क्षेत्र, तीस चौबीसी, तीन कम नौ करोड़ गणधरादि मुनिश्वरेभ्यो समुच्चय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(पुष्पक्षेपण करते हुए शांति पाठ बोलें)

शांतिपाठ

शांतिनाथ शांति के दाता, भवि जीवों के भाग्य विधाता ।
परम शांत मुद्रा जो धारे, जग जीवों के तारण हारे ।।
शरण आपकी जो भी आते, वे अपने सौभाग्य जगाते ।
शांतिपाठ पूजा कर गाएँ, पुष्पांजलि करशांतिजगाएँ ।।
जिन पद शांती धार कराएँ, जीवन में सुख शांति पाएँ ।
जीवों को सुख शांति प्रदायी, धर्म सुधामृत के वरदायी ।।
शांतिनाथ दुख दारिद्र नाशी, सम्यक्दर्शन ज्ञान प्रकाशी ।
राजा प्रजा भक्त नर-नारी, भक्ति करें सब मंगलकारी ।।
जैन धर्म जिन आगम ध्यायें, परमेष्ठी पद शीश झुकाएँ ।

श्री पार्श्वनाथ भगवान की आरती

ॐ जय पारस देवा, स्वामी जय पारस देवा।
तुम हो विघ्न विनाशक-2, देवों के देवा।।
ॐ जय पारस देवा।।टेक।।
जन्म लिए काशी नगरी में, जग जन हितकारी - 2।
अश्वसेन वामा माँ के सुत-2, नाग चिन्हधारी।।
ॐ जय पारस देवा।।1।।
युवा अवस्था में प्रभु तुमने, संयमधार लिया - 2।
धार दिगम्बर मुद्रा-2, निज का ध्यान किया।।
ॐ जय पारस देवा।।2।।
वैरा विचार कमठ ने आके, उपसर्ग किया भारी - 2।
समता रस में लीन हुए प्रभु-2, जिनवर अविकारी।।
ॐ जय पारस देवा।।3।।
अहिच्छत्र में प्रभु जी तुमने, 'विशद' ज्ञान पाया - 2।
सौ इन्द्रों ने प्रभु के -2, पद में सिरनाया।।
ॐ जय पारस देवा।।4।।
स्वर्णभद्र सम्मेद शिखर से, शिव पद को पाया -2।
भयहर नमिऊण स्तोत्र के द्वारा-2, श्री जिन को ध्याया।।
ॐ जय पारस देवा।।5।।
ॐ जय पारस देवा, स्वामी जय पारस देवा।
तुम हो विघ्न विनाशक-2, देवों के देवा।।
ॐ जय पारस देवा।।टेक।।

श्री विशदसागरजी महाराज की आरती

विशदसागर की गुण आगर की।
शुभ मंगल दीप जलाय हो ।।
मैं आज उतारूं आरतिया ।।टेक।।
नाथूराम श्री इंदर जी के, गर्भ विषें गुरु आए।
घर घर खुशी के दीप जले हैं, सब जन मंगल गाए ।।
गुरु जी, सब जन मंगल गाए।
गृह त्यागी की वैरागी की, ले दीप सुमन का आज हो ।।
मैं आज उतारूं आरतिया ।।1।।
गुरुवर शील व्रतो के धारी, आतम ब्रम्ह्म विहारी।
खड्ग धार शिव पथ पर चलते, शिथिला चार निवारी ।।
गुरु जी शिथलाचार निवारी।
ना रागी की न द्वेषी की शुभ मंगल दीप जलाय हो ।।
मैं आज उतारूं आरतियाँ ।।2।।
गुरू विराग सिंधु से आकर, तुमने दीक्षा धारी।
तुमने अपने घर को छोड़ा, दुनिया छोड़ी सारी ।।
गुरु जी दुनिया छोड़ी सारी।
ना रोगी की ना भोगी की, ले दीप रतन मय आज हो।
मैं आज उतारूं आरतियाँ ।।3।।
गुरुवर आज नयन से लखकर, आलौकिक सुख पाया।
भक्ति भाव से स्तुति करके, फूला नहीं समाया ।।
गुरु जी फूला नहीं समाया।
ऐसे गुरुवर को ऐसे मुनिवर को, कर वंदन बारंबार हो ।।
मैं आज उतारूं आरतियाँ।
विशदसागर की..... ।।4।।

क्षु. विनिर्भय सागर

आचार्य श्री विशद सागर जी महाराज
(जीवन दर्शन)

पूर्व नाम - **श्री रमेशचन्द्र जैन**
पिता का नाम - श्री नाथूराम जैन
माता का नाम - श्रीमती इन्दर देवी जैन
जन्म तिथि - 11-04-1664 (चैत्र कृष्ण चतुर्दशी)
लौकिक शिक्षा - एम. ए. प्रथम
गृहस्थ अवस्था के भाई/भाभी -
श्री केवलचन्द्र-श्रीमती शशि जैन, श्री पुष्पेन्द्र-श्रीमती ममता जैन, विमल-श्रीमती ज्योति जैन,मनोज जैन-श्रीमती वर्षा जैन
बहिन/बहनोई - श्रीमती प्रभादेवी-श्री आनंदजी जैन, शाहगढ़
श्रीमत॰ मालती देवी जैन, श्री सुनीलजी जैन, बमीठा
श्रीमती अंगूरी देवी जैन-श्री प्रशन्न जैन, महरौनी
ब्रह्मचार्य व्रत - 8 नवम्बर 1992
गणाचार्य श्री विरागसागर जी
से उन्हीं के आचार्य पद दिवस पर
सिद्धक्षेत्र द्रोणगिरजी में
2 प्रतिमा व्रत प्रदाता - वात्सल्य रत्नाकर
आचार्य श्री विमलसागरजी महाराज
ऐलक दीक्षा - 18 दिसम्बर 1993 (श्रेयांसगिरि में)
आचार्य गुरुदेव श्री विरागसागरजी से
मुनि दीक्षा - 8 फरवरी 1996
(द्रोणागिरिजी में) (फाल्गुन कृष्ण चतुर्थी)
दीक्षा गुरु - **परम पूज्य गणाचार्य**
श्री विराग सागर जी महाराज

आचार्य पद - 13 फरवरी 2005 (बसन्त पंचमी, मालपुरा में)
आचार्य गुरूदेव श्री विरागसागरजी महाराज की अनुमति से आचार्य पद संस्कार प्रदाता - मर्यादा शिष्योत्तम **आचार्य श्री भरतसागरजी महाराज**

रुचि - लेखन, चिंतन, मनन, पठन, पाठन, काव्य लेखन

32 वर्षायोग 1993 से 2025 तक क्रमशः -

ब्रह्मचारी अवस्था में : श्रेयांसगिरि

ऐलक अवस्था में : बीना जिला-सागर, ललितपुर (उ.प्र.)।

मुनि अवस्था में : कटंगी-जिला जबलपुर, देवरी-जिला सागर, गोटेगाँव, मडावरा (उ.प्र.), बाँसा-जिला दमोह (म.प्र.), रहली (म.प्र.), खनियाधाना (म.प्र.), जयपुर (राज.)।

आचार्य अवस्था में : निवाई, अलवर, अजमेर, मालपुरा, भीलवाड़ा, श्री चंवलेश्वर पार्श्वनाथजी (राज.), रेवाड़ी (हरियाणा)शास्त्री नगर दिल्ली, शकरपुर-दिल्ली, तिजारा, मानसरोवर-जयपुर, टोंक (राज.), गुडगांव-हरियाणा, न्यू उस्मानपुर-दिल्ली, हरिद्वार, कम्पिलाजी– जिला-फर्रुखाबाद, बनारस, श्री सम्मेद शिखरजी, लखनऊ, झांसी (उ.प्र.), सुदामा नगर- इन्दौर

दीक्षित शिष्यः - स्थविर मुनि श्री विशाल सागर जी महाराज, मुनि श्री विबुद्ध सागर जी, मुनि श्री उपशम सागर जी (समाधि), मुनि श्री विश्वानंद जी (समाधि), मुनि श्री विभक्त सागर जी, मुनि श्री विशुभ सागर जी, मुनि श्री विभोर सागर जी, मुनि श्री विलक्ष्य सागर जी, मुनि श्री विपिन सागर जी, मुनिश्री विसर्ग सागरजी (समाधिस्थ)

आर्यिका श्री भक्ति भारती माताजी, क्षुल्लिका श्री वात्सल्य भारती

माताजी, क्षुल्लक श्री विगुण सागर जी, क्षुल्लक श्री विसौम सागर जी (समाधि), ब्रह्मचारिणी ज्योति दीदी, आस्था दीदी, सपना दीदी, सोनू दीदी, आरती दीदी, ब्रह्मचारी प्रदीप भैया, विकास भैय्या, लालजी।

सन् 1993 से 2025 तक आचार्य श्री के सानिध्य एवं मार्गदर्शन में 108 पंचकल्याणक एवं वेदी प्रतिष्ठाएँ सम्पन्न हुईं।

बरौदिया कला, नासिरदा एवं नैकोरा में विशद सागर माध्यमिक विद्यालय में लगभग 1000 विद्यार्थी अध्ययन कर रहे हैं। यह तीनों स्कूल आपकी सदप्रेरणा से ही चल रहे हैं। भारत के विभिन्न प्रान्तों के 50 स्थानों पर जिनालय, सन्त निवास, मांगलिक भवन, धर्मशाला, यात्री निवास, स्वाध्याय भवन, प्रवचन स्थल, आहार शाला, वाचनालय, साहित्य केन्द्र, पाठशाला आदि के सदकार्य आपकी पावन प्रेरणा एवं मंगल आशीर्वाद से सम्पन्न हुए।

परम पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री विशद सागर जी महाराज ने अपने उपयोग को श्रुत की सेवा में रमाते हुए अब तक 500 प्रकार की जिनधर्म सम्बन्धी पुस्तकों का लेखन कार्य किया। जिनमें 250 प्रकार के तो पूजा विधान ही हैं। 35 प्रकार के शास्त्रों का पद्यानुवाद, 2000 मुक्तक, 1000 भजन, 108 प्रकार के स्तुति-स्तोत्र, 165 प्रकार की आरतियाँ, 80 प्रकार के चालीसा, सभी सिद्ध क्षेत्रों, तीर्थ क्षेत्र की पूजाएँ, लघु पूजा पीठिका, अभिषेक पाठ, शांतिधारा, लयबद्ध सभी पूजाओं की एक ही तर्ज पर अर्घावली आदि अनेक प्रकार की रचना कर चुके हैं। स्वरचित कहानियाँ (मूक उपदेश) चिंतन डायरी, संस्कृत स्तोत्र एवं विधान भी प्रकाशित हुए।

आपको विभिन्न समाजों के द्वारा अनेक उपाधियों से अलंकृत किया गया जिनमें से प्रमुख हैं- क्षमामूर्ति, साहित्य रत्नाकर, सर्वाधिक विधान रचयिता, काव्य अलंकाराचार्य, चंवलेश्वर के छोटे बाबा, हरिद्वार आदिश्वर धाम के छोटे बाबा, कुशल काव्य सृजनकर्ता।

पंचकल्याणक प्रभावक, विधानवाचस्पति, विधानाचार्य, तीर्थ जीर्णोधारक, वर्तमान के अकलंक, श्रेष्ठ काव्य शिरोमणि, विशद ज्ञान वारिधि आदि।

32 साल के साधनाकाल में- णमोकार, भक्तामर आदि विभिन्न व्रतों के 1008 उपवास कर चुके हैं। अष्टमी/ चतुर्दशी को प्रायः नीरस आहार लेते हैं।

आपने सम्मेद शिखर जी की 108 वन्दना की बुन्देलखण्ड, झारखण्ड, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, मालवा, हरियाणा, दिल्ली, निमाड़ क्षेत्र आदि क्षेत्रों में पड़ने वाले सिद्ध क्षेत्र/ अतिशय क्षेत्र/ तीर्थ क्षेत्रों की वन्दना कर अथाह पुण्य का अर्जन किया।

आपकी सदप्रेरणा से आप ही के द्वारा रचित विभिन्न विधान भारत के विभिन्न जिनालयों में लगभग 5000 बार भक्ति भाव से भारी धर्म प्रभावना के साथ सम्पन्न हो चुके। हम मुनि अवस्था में 21 वर्षो से गुरुवर की छत्र छाया में साधनारत है गुरुवर के सद् साहित्य का संकलन/संपादन करने का एवं पूजा विधान आदि करवाने का भी हमे भी सौभाग्य मिला। ऐसे धर्म प्रभावक गुरुवर के श्री चरणों में त्रय भक्ति युत नमोस्तु-3

(संकलन - स्थविर मुनिश्री विशाल सागरजी महाराज)